सन्तुष्टता का आधार – सम्बन्ध, सम्पत्ति और सेहत (तन्दुरुस्ती)

3-4-94

सन्तुष्टता की स्थिति द्वारा परिस्थिति-ों को परिवर्तन करने की विधि बताने वाले बापदादा अपने सन्तोषी बच्चों प्रति बोले–

आज दिलाराम बाप अपने सदा सन्तुष्ट रहने वाली सन्तुष्ट आत्माओं व सन्तुष्ट मणि-ों को देख रहे हैं। -ो रूहानी मणि-ों की चमक सारे दरबार को चमका रही है। सन्तोषी आत्मा-ें स्व-ं को भी प्रि-ा और सर्व को भी प्रि-ा और बाप को तो प्रि-ा हैं ही। तो ऐसे हो ना? क-ोंकि इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन में अप्राप्ति का नाम ही नहीं है। सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा-ें हो। तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं वहाँ सदा सन्तुष्टता स्वत: और स्वाभाविक है ही। नेचरल स्वभाव उसका सन्तोष का है और सन्तुष्टता का स्वरूप व स्वभाव, निजी संस्कार ऐसा श्रेष्ठ है जो असन्तुष्ट आत्मा के भी असन्तुष्टता का वा-ाब्रेशन, वा-ुमण्डल, सन्तोष वा-ुम-ण्डल में बदल देता है। **इस संगम-ुग में विशेष बापदादा की देन सन्तुष्टता है।** एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है। लेकिन सदा सन्तुष्ट हो। परिस्थिति कितनी भी बदले लेकिन सन्तुष्टता की स्थिति को परिस्थिति बदल नहीं सकती। पर-स्थिति है ही बदलने वाली। लेकिन स्व-सन्तुष्टता की स्थिति सदा प्रगतिशील है। आपके आगे कैसी भी हिलाने वाली परिस्थिति ऐसे ही अनुभव होती है जैसे पपेट (कठपुतली) शो देखते हो ना। होता सब कुछ है लेकिन होता पपेट है। तो कैसी भी परिस्थिति पपेट शो लगता है वा आजकल का जो फैशन है कार्टून शो, अच्छा लगता है ना। होता तो शेर भी है, बिल्ली भी होती है, लेकिन होता क-ाा है? कार्टून। कहानी पूरी होती है लेकिन है कार्टून की स्टोरी, री-ाल नहीं है। कभी भी, कोई भी परिस्थिति आए तो -ाही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान होंगे कि मनोरंजन करेंगे? शो देखना तो अच्छा ही है ना। तो -ाह मा-ाा का वा प्रकृति का -ाह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट

मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ। -ो है संगम का श्रेष्ठ शान। तो शान में स्थित होना आता है ना कि परेशान होना अच्छा लगता है? सदा सन्तुष्टता की विशेषता को इमर्ज रूप में स्मृति में रखो।

प्राप्ति-ों में विशेष सम्बन्ध और सम्पत्ति आवश-ाक है। सम्बन्ध में भी अगर एक भी सम्बन्ध अप्राप्त है तो सम्पूर्ण सन्तुष्टता नहीं होगी। तो सम्बन्ध में भी सर्व चाहि-ो और अविनाशी चाहि-ो। अगर कोई भी सम्बन्ध विनाशी है तो अप्राप्ति और असन्तुष्टता स्वत: हो जाती है। लेकिन एक ही वर्तमान संगम-ाुग है जिसमें सर्व अविनाशी सम्बन्ध एक बाप से अनुभव कर सकते हो। सत-ाुग में भी सम्बन्ध बहुत थोड़े हैं, सर्व नहीं हैं, लेकिन इस सम-ा जिस सम्बन्ध की आकर्षण हो, अनुभूति करना चाहे वो सम्बन्ध परम आत्मा द्वारा अनुभव कर सकते हो। हर एक के जीवन में सम्बन्ध की भी अलग-अलग पसन्दी होती है। किसको बाप का सम्बन्ध इतना अच्छा नहीं लगेगा, फ्रैण्ड ज-ाादा अच्छा लगेगा। लेकिन एक सम-ा पर और एक से सर्व सम्बन्ध प्राप्त हैं? सर्व प्राप्ति है कि कुछ रहा हुआ है? पीछे बैठे हुए क-ाा समझते हैं? आज न-ो-न-ो को आगे बैठने का चांस दि-ाा है। अच्छा, जो इस कल्प में इस बार पहली बार आ-ो हैं वो हाथ उठाओ। भले पधारे। बापदादा भी पद्मगुणा स्नेह सम्पन्न वेलकम कर रहे हैं। न-ो होते भी कल्प-कल्प के अधिकारी हैं, -ो तो समझते हो ना? बापदादा सदा कहते हैं–बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। इसलि-ो सदा अपने रूहानी बेहद के सम्पूर्ण अधिकार के निश्च-ा और नशे में रहो। बेहद का नशा है, हद का नहीं रखना। देखो, कितने श्रेष्ठ अधिकारी हो जो स्व-ं बाप ऑलमाइटी अथॉरिटी के ऊपर अधिकार रख दि-ाा। परमात्म-अधिकारी–इससे बड़ा अधिकार और है ही क-ाा! जब बीज को अपना बना लि-ाा तो वृक्ष तो समा-ाा हुआ है ही। सर्व सम्बन्धों का भी अविनाशी अधिकार ले लि-ाा और सम्पत्ति में भी अगर सिर्फ स्थूल सम्पत्ति है तो भी सदा सन्तुष्ट नहीं रह सकते। स्थूल सम्पत्ति के साथ अगर सर्व गुणों की सम्पत्ति, सर्व शक्ति-ों की सम्पत्ति और श्रेष्ठ सम्पन्न ज्ञान की सम्पत्ति नहीं है तो सन्तुष्टता सदा नहीं रह सकती। लेकिन आप सबके पास -ाह श्रेष्ठ सम्पत्ति-ाँ हैं। सम्पत्तिवान हो ना? दुनि-ाा वाले तो सिर्फ स्थूल सम्पत्ति वाले को सम्पत्ति भव का वरदान देते हैं लेकिन आप सबको वरदाता बाप सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति भव का वरदान

देते हैं। तो सब सम्पत्ति हैं ना कि कोई कम है? फुल है? पीछे वालों के ऊपर सबसे ज-ादा ध्-ान है। आगे वालों का ध्-ान बाप के तरफ ज-ादा है और बाप का ध्-ान पीछे वालों के ऊपर ज-ादा है। जितना ही दूर हैं उतना ही न-ानों में समा-ो हुए हैं।

साकार वतन में तो साकार की बातें होती हैं। देखो, परमधाम में आप सभी आत्मा-ें कितनी समीप होंगी! सभी साथ होंगे ना और सूक्ष्म वतन में भी इतना बेहद है जो जितना समीप आना चाहे आ सकते हैं। लेकिन बच्चों का स्नेह निराकार और आकार को भी साकार बनाना चाहता है। तो बाप क-ाा कहते हैं? जी हज़ूर, जी हाज़िर। बच्चे तो बाप के भी हज़ूर हैं, मालिक हैं ना। मालिक को हज़ूर कहा जाता है और बालक को भी मालिक कहा जाता है। तो सभी कौन हो? सन्तुष्ट मणि-ां। सम्बन्ध में भी सन्तुष्ट और सम्पत्ति में भी सन्तुष्ट। सम्बन्ध, सम्पत्ति और तीसरी होती है सेहत, तन्दुरुस्ती। आप सभी तन्दुरुस्त हो ना कि बीमार हो? आत्मा तो तन्दुरुस्त है ना, शरीर की कोई बात ही नहीं। आत्मा सदा शक्तिशाली है। संगम पर श्रेष्ठ सेहत वा तन्दुरुती है आत्मा की तन्दुरुस्ती। इस सम-ा के आत्मा की तन्दुरुस्ती जन्म-जन्म के शरीर की तन्दुरुस्ती भी दिलाती है। लेकिन इस सम-ा थोड़ा-सा प्रकृति अपना रूप दिखाती है। इसमें भी कोई बड़ी बात नहीं। -ाह भी कार्टून शो है। तो सर्व प्राप्ति-ाँ हैं ना। सम्बन्ध भी हैं, सम्पत्ति भव भी है, 'सर्व सम्बन्ध भव' भी है और 'सदा तन्दुरुस्त भव' भी हैं। तीनों वरदान वरदाता बाप से मिले हुए हैं। तो वरदानों को सम-ा पर का-र्ा में लगाओ। सिर्फ वरदान सुनकर खुश नहीं हो जाओ कि हाँ, मुझे बहुत अच्छा वरदान मिला -ाा सिर्फ नोट करके नहीं रखो लेकिन सम-ा पर वरदान को काम में लगाने से वरदान का-ाम रहते हैं। अगर वरदानों को सम-ा पर काम में नहीं लगा-ाा तो वह वरदान फल नहीं देता। वरदान तो अविनाशी बाप का है लेकिन वरदान को फलीभूत करना है। बीज तो है लेकिन उससे फल कितना निकालते हो, वह आपके हाथ में है। कोई सिर्फ वरदान के बीज को देखकरके खुश होते रहते हैं–बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, लेकिन फलदा-ाक बनाओ। बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में स्थित होने की धूप दो, फिर देखो वरदान सदा फलीभूत होता रहेगा, और वरदानों को भी साथ में ला-ोगा। वरदानों के फल स्वरूप बन जा-ोंगे। तो आज के त्रि-

वरदान को फलीभूत करना और सम-ा पर ज़रूर -ाद रखना। सम-ा पर भूल जाते हैं, पीछे पढ़ते रहते हो कि हाँ, -ो वरदान तो था! वरदानों को जितना सम-ा पर का-र्ा में लगा-ोंगे उतना वरदान और श्रेष्ठ स्वरूप दिखाता रहेगा। तो सभी को वरदान मिला ना! अच्छा।

अभी जो ५ तरफ से ग्रुप आ-ो हैं वो नम्बरवार हाथ उठाओ।

एशि-ाा – इसमें भारतवासी तथा मधुबनवासी भी हाथ उठाओ। मधुबनवासी तो विशेष हैं। -ो बड़ा ग्रुप है। भारत वाले भी चांस लेने में होशि-ाार हैं। तो एशि-ाा निवासि-ों के प्रति विशेष आज के दिन तीन वरदान तो सभी के हैं ही, लेकिन विशेष एशि-ाा प्रति 'सदा शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव भव'। शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव--ो विशेष वरदान एशि-ाा निवासि-ों के प्रति है।

-ूरोप – -ूरोप में इंगलैण्ड भी आ ग-ाा। -ूरोप निवासि-ों के प्रति विशेष वरदान है कि 'सदा ज़ीरो और हीरो भव'। ज़ीरो का तो पता है ना। तीन ज़ीरो -ाद रखना, सिर्फ एक नहीं। ज़ीरो और हीरो एक्टर हैं और हीरे समान हैं, डबल हीरो। तो तीन ज़ीरो और डबल हीरो। तो -ो वरदान -ूरोप निवासि-ों के प्रति है।

अमेरिका – पूरा अमेरिका हाथ उठाओ। एक्सरसाइज़ करो और सीधा हाथ उठाओ। कइ-ों को आदत है छोटा हाथ उठाने की। बापदादा को छोटा हाथ वाला हाफ़ कास्ट लगता है। फुल हाथ उठाओ।
तो अमेरिका निवासी सर्व आत्माओं के प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा मा-ाा से इनोसेन्ट और विज-ा में सेन्ट परसेन्ट और स्थिति में सदा सेन्ट।' सेन्ट खुशबू वाले भी और सेन्ट अर्थात् महान् आत्मा, डबल सेन्ट। तो 'सदा इनोसेन्ट भी और डबल सेन्ट भव'।

अफ्रिका, मॉरिशि-ास – आज बापदादा सीधा हाथ उठाने की ड्रिल करा रहे हैं। डॉक्टर्स भी कहते हैं ना ड्रिल करो। सर्व अफिका निवासी बच्चों प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा सर्व प्रासपर्टी और सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में सहज ऑनेस्टी भव, प्रासपर्टी भव और त्रि-स्वरूप से सहज ऑनेस्टी भव'।

ऑस्ट्रेलि-ा, न्-ाुज़ीलैण्ड – ऑस्ट्रेलि-ा निवासी सर्वश्रेष्ठ भाग्-ावान आत्माओं प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा मा-ा से विज-ी और साथ-साथ मा-ा जीत, विश्व के राज-ा जीत श्रेष्ठ वरदान भव'। साथ-साथ 'सदा निश्चिन्त और निश्च-ा निश्चित भव'। ऑस्ट्रेलि-ा निवासी विशेष बाप के प्रि-ा हैं। हैं तो सभी प्रि-ा लेकिन विशेष ऑस्ट्रेलि-ा निवासी प्रि-ा क-ों हैं? बाप की विशेष स्नेह की नज़र ऑस्ट्रेलि-ा निवासि-ों के ऊपर रहती है। क-ों? क-ोंकि ऑस्ट्रेलि-ा निवासि-ों की धरनी कमाल करने में बहुत अच्छी है लेकिन बाप विशेष धरनी को स्नेह का पानी देते हैं। इसीलि-े विशेष स्नेह है। समझा? तो ऑस्ट्रेलि-ा वाले कमाल बहुत कर सकते हैं। अभी थोड़ी-थोड़ी की है। और ऑस्ट्रेलि-ा का नाम भी अन्त में लि-ा है तो अन्त वाले को कुछ एक्स्ट्रा देना चाहि-े। तो सभी को वरदान मिला।

मधुबन – मधुबन निवासी विशेष हैं। चाहे वर्तमान सम-ा ज्ञान सरोवर निवासी हैं, चाहे विश्व को सदा हेल्दी बनाने वाले हॉस्पिटल वाले हैं, सिर्फ हेल्दी नहीं, हैप्पी हेल्दी। चाहे मधुबन में चारों ओर घेराव डालने वाले बच्चे हैं। आबू में घेराव डाल रहे हैं ना। तो सर्व मधुबन निवासी विशेष बच्चों प्रति विशेष वरदान है कि 'सदा मन्सा, वाचा, कर्मणा–तीनों में सेन्ट-परसेन्ट प्रगति भव'।
बाकी जहाँ से भी सभी बच्चे आ-े हैं भिन्न-भिन्न विदेश के देशों से वा भारत के देश से सभी को विशेष 'सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण भव'। अहमदाबाद वाले भी सेवा बहुत अच्छी करते हैं। मधुबन में भी अथक सेवाधारी हैं तो विशेष अहमदाबाद, दिल्ली और बाम्बे–इन तीनों स्थानों को भी सेवा का बहुत अच्छा चांस मिला हुआ है। सभी स्थान अपने स्नेह-सम्पन्न अथक सेवाधारी बन सेवा कर रहे हैं और करते रहेंगे। सेवा की मुबारक हो।

और चारों ओर के जो दूर बैठे बहुत दिल में समीप हैं, तो चारों ओर के देश-विदेश के सर्व सन्तोषी आत्माओं को, सन्तुष्टमणि-ों को, सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्माओं को, जिन्होंने भी -ाद, पत्र, कार्ड आज के दिवस के भी भेजे हैं, तो आज के विशेष दिवस की भी सर्व बच्चों को -ाद-प्-ाार पद्मगुणा स्वीकार हो। चाहे दूर बैठकर मन में, दिल में मना रहे हैं, चाहे सम्मुख मना रहे हैं, कार्ड वा पत्र सब पहले वतन में पहुँचते हैं। तो सभी के पत्र, कार्ड और शुभ संकल्पों की

-ाद, शुभ भावनाओं की -ाद के रिटर्न में बापदादा का विशेष -ाद-प्-ार और सर्व बालक सो मालिक बच्चों को नमस्ते। अच्छा।

दादि-ों से मुलाकात

सूक्ष्म इशारों की भाषा तो जानते हो ना। जैसे अव्-ाक्त बाप इशारों की ही भाषा जानते हैं। अव्-ाक्त वतन में तो न-ानों की भाषा और इशारों की भाषा है। तो आप भी जानते हो ना। न-ानों की भाषा जानते हो? साकार से सीखे हो ना। मुख की भाषा तो सुनी, अभी है न-ानों की भाषा। न-ानों की भाषा बड़ी प्-ारी है। आवाज़ से परे तो जाना ही है। फिर भी बाप जी हज़ूर तो करते ही हैं। अच्छा।

(लास्ट में बापदादा ने हाथ उठाकर सभी को आशीर्वाद दि-ा और विदाई ली)

कोई भी परिस्थिति आए तो -ाही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान नहीं होंगे। मा-ा का वा प्रकृति का -ाह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ।